Original Article
ISSN (Online): 2582-7472

ShodhKosh: Journal of Visual and Performing Arts
January-June 2024 5(1), 2298–3002

COMPARATIVE STUDY OF LIFE SATISFACTION OF TEACHERS WORKING IN SUBSIDIZED AND PRIVATE B.ED. INSTITUTIONS

अनुदानित तथा प्राइवेट बी.एड.सस्थानों में कार्यरत शिक्षकों की जीवन सन्तुष्टि का तुलनात्मक अध्ययन

Shubham Panwar [1], Bindu Singh [2]

[1] Researcher, Department of Pedagogy, IFTM University, Moradabad, India
[2] Assistant Professor, Department of Pedagogy, IFTM University, Moradabad, India

ABSTRACT

English: Life satisfaction of teachers is not only related to their personal well-being, but it also has a profound impact on their professional efficiency, teaching quality and overall development of learners. The aim of the present research study is to do a comparative analysis of the level of life satisfaction of teachers working in subsidized (government aided) and private (private) B.Ed. institutions. This study makes it clear that the major factors affecting the life satisfaction of teachers are salary, job security, work environment, social recognition, work-life balance, and career progression prospects. Teachers working in subsidized B.Ed. institutions get the benefit of relatively more stability, regular salary, social security schemes, and better service conditions. In contrast, teachers working in private institutions often face low salaries, uncertain contracts, high workload, and low social recognition. Due to these reasons, teachers in aided institutions appear to be more satisfied with their lives, while teachers in private institutions are more stressed, insecure, and dissatisfied. The study also found that availability of physical resources, transparency of institutional administration, supportive environment, and leadership style are also determinants of teacher satisfaction. In institutions where the administration is collaborative, communicative, and democratic, the level of teacher satisfaction is relatively higher. Apart from this, family responsibilities, social relationships, mental health, and personal aspirations also affect life satisfaction. These factors are relatively more present in aided institutions, due to which teachers there appear to be more satisfied. In contrast, teachers working in private institutions feel anxious and insecure about their profession, which affects their life satisfaction.

Hindi: शिक्षकों की जीवन संतुष्टि न केवल उनकी व्यक्तिगत भलाई से संबंधित है, बल्कि यह उनकी पेशेवर दक्षता, शिक्षण गुणवत्ता और शिक्षार्थियों के समग्र विकास पर भी गहरा प्रभाव डालती है। प्रस्तुत शोध अध्ययन का उद्देश्य अनुदानित (सरकारी सहायता प्राप्त) एवं प्राइवेट (निजी) बी.एड. संस्थानों में कार्यरत शिक्षकों की जीवन संतुष्टि के स्तर का तुलनात्मक विश्लेषण करना है। यह अध्ययन यह स्पष्ट करता है कि शिक्षकों की जीवन संतुष्टि को प्रभावित करने वाले प्रमुख कारकों में वेतन, नौकरी की सुरक्षा, कार्य परिवेश, सामाजिक मान्यता, कार्य-जीवन संतुलन, एवं करियर की प्रगति की संभावनाएं प्रमुख हैं। अनुदानित बी.एड. संस्थानों में कार्यरत शिक्षक अपेक्षाकृत अधिक स्थिरता, नियमित वेतन, सामाजिक सुरक्षा योजनाओं, व बेहतर सेवा शर्तों का लाभ प्राप्त करते हैं। इसके विपरीत, प्राइवेट संस्थानों में कार्यरत शिक्षकों को अक्सर कम वेतन, अनिश्चित अनुबंध, कार्य का अधिक बोझ, तथा कम सामाजिक मान्यता का सामना करना पड़ता है। इन कारणों से अनुदानित संस्थानों के शिक्षक अधिक जीवन संतुष्ट प्रतीत होते हैं, जबकि निजी संस्थानों के शिक्षकों में तनाव, असुरक्षा की भावना तथा असंतोष अधिक देखा गया। अध्ययन से यह भी ज्ञात होता है कि भौतिक संसाधनों की उपलब्धता, संस्थागत प्रशासन की पारदर्शिता, सहयोगी वातावरण, एवं नेतृत्व शैली भी शिक्षकों की संतुष्टि के निर्धारक तत्व हैं। जिन संस्थानों में प्रशासन सहयोगात्मक, संवादात्मक व लोकतांत्रिक होता है, वहाँ शिक्षकों की संतुष्टि का स्तर अपेक्षाकृत अधिक होता है। इसके अलावा, पारिवारिक जिम्मेदारियाँ, सामाजिक संबंध, मानसिक स्वास्थ्य एवं

DOI
10.29121/shodhkosh.v5.i1.2024.5372

Funding: This research received no specific grant from any funding agency in the public, commercial, or not-for-profit sectors.

Copyright: © 2024 The Author(s). This work is licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License.

With the license CC-BY, authors retain the copyright, allowing anyone to download, reuse, re-print, modify, distribute, and/or copy their contribution. The work must be properly attributed to its author.

OPEN ACCESS

व्यक्तिगत आकांक्षाएं भी जीवन संतुष्टि को प्रभावित करती हैं। अनुदानित संस्थानों में इन कारकों की उपस्थिति अपेक्षाकृत अधिक होती है, जिससे वहाँ के शिक्षक अधिक संतुष्ट दिखाई देते हैं। इसके विपरीत, निजी संस्थानों में कार्यरत शिक्षक अपने पेशे को लेकर चिंतित व असुरक्षित अनुभव करते हैं, जिससे उनकी जीवन संतुष्टि प्रभावित होती है।

Keywords: Aided and Private B.Ed. Institutions, Teachers and Life Satisfaction, अनुदानित तथा प्राइवेट बी.एड. संस्थान, शिक्षक एवं जीवन सन्तुष्टि

1. प्रस्तावना

शिक्षा किसी भी राष्ट्र के सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक तथा राजनीतिक विकास की नींव होती है और शिक्षक उस नींव के निर्माता। एक कुशल शिक्षक न केवल ज्ञान का संप्रेषण करता है, अपितु छात्रों के व्यक्तित्व को गढ़ने, मूल्यों को स्थापित करने एवं उन्हें एक जिम्मेदार नागरिक बनाने की दिशा में निर्णायक भूमिका निभाता है। विशेष रूप से शिक्षक-प्रशिक्षण संस्थानों में कार्यरत शिक्षक तो उस प्रक्रिया के मार्गदर्शक होते हैं जो भावी शिक्षकों को गढ़ते हैं। बी.एड. जैसे पेशेवर शिक्षण पाठ्यक्रमों में शिक्षकों की भूमिका और भी महत्त्वपूर्ण हो जाती है क्योंकि उनका कार्य केवल विषय-वस्तु का अध्यापन नहीं होता, बल्कि भावी शिक्षकों में शैक्षिक दृष्टिकोण, मनोवैज्ञानिक समझ, नैतिक मूल्यों एवं व्यवहारिक दक्षताओं का विकास करना भी होता है। ऐसी परिस्थिति में इन संस्थानों में कार्यरत शिक्षकों की कार्य संतुष्टि ही नहीं, जीवन संतुष्टि भी अत्यंत महत्वपूर्ण हो जाती है, क्योंकि जीवन संतुष्टि ही उनकी प्रेरणा, मानसिक स्वास्थ्य, कार्य-प्रदर्शन और संस्थागत प्रतिबद्धता को प्रभावित करती है। जीवन संतुष्टि एक बहुआयामी अवधारणा है जिसमें व्यक्ति के व्यक्तिगत, पारिवारिक, सामाजिक, आर्थिक तथा पेशेवर जीवन के प्रति उसके समग्र संतोष की भावना सम्मिलित होती है। जब व्यक्ति को यह प्रतीत होता है कि उसका जीवन उद्देश्यपूर्ण, संतुलित और संतोषजनक है, तभी वह जीवन संतुष्ट कहलाता है। शिक्षक की जीवन संतुष्टि उसकी कार्य कुशलता, नवाचारों में रुचि, शिक्षण प्रभावशीलता तथा छात्रों के साथ व्यवहार में परिलक्षित होती है। जीवन संतुष्टि का स्तर अनेक कारकों से प्रभावित होता है जैसे आर्थिक स्थिति, कार्य स्थल की परिस्थितियाँ, प्रशासनिक समर्थन, सामाजिक सम्मान, पारिवारिक जीवन की स्थिरता, मानसिक स्वास्थ्य, कार्य-जीवन संतुलन आदि। भारत में बी.एड. पाठ्यक्रम संचालित करने वाले संस्थानों को इतवंकसल दो श्रेणियों में विभाजित किया जा सकता है अनुदानित (सरकारी सहायता प्राप्त) संस्थान तथा प्राइवेट (निजी) संस्थान। अनुदानित संस्थानों को सरकार से आर्थिक सहायता प्राप्त होती है तथा वहाँ के शिक्षकों की सेवा शर्तें, वेतनमान एवं अन्य लाभ सरकारी नियमों के अधीन होते हैं, जबकि निजी बी.एड. संस्थानों में कार्यरत शिक्षकों की स्थिति भिन्न होती है वहाँ वेतनमान, सेवा सुरक्षा, कार्य स्थायित्व और संसाधनों की उपलब्धता में भारी अंतर देखा जाता है। इसके परिणामस्वरूप इन दोनों श्रेणियों के शिक्षकों के कार्य-अनुभवों में विविधता उत्पन्न होती है, जो उनकी जीवन संतुष्टि को प्रभावित कर सकती है। वर्तमान संदर्भ में यह तुलनात्मक अध्ययन इसलिए और भी अधिक महत्त्वपूर्ण हो जाता है क्योंकि भारत में निजी बी.एड. संस्थानों की संख्या में अत्यधिक वृद्धि हुई है, परंतु गुणवत्ता, पारदर्शिता तथा शिक्षक कल्याण के संदर्भ में अनेक प्रश्नचिह्न भी खड़े हुए हैं। एक ओर अनुदानित संस्थानों में कार्यरत शिक्षकों को अपेक्षाकृत बेहतर वेतन, सेवा सुरक्षा, सामाजिक सम्मान तथा कार्य स्थायित्व प्राप्त होता है, जिससे उनके जीवन संतुष्टि स्तर को बल मिल सकता है वहीं दूसरी ओर निजी संस्थानों में कार्यरत शिक्षक अकसर अल्प वेतन, कार्य-अस्थिरता, अनुबंध आधारित नियुक्ति, संसाधनों की कमी तथा प्रशासनिक दबाव का सामना करते हैं, जो उनकी मानसिक स्थिति, पारिवारिक जीवन तथा आत्म-संतोष को प्रभावित कर सकता है। साथ ही, यह भी एक तथ्य है कि कुछ निजी संस्थानों में आधुनिक संसाधनों, तकनीकी नवाचारों एवं लचीले कार्य वातावरण के कारण शिक्षकों को सृजनात्मक कार्य की अधिक स्वतंत्रता मिलती है, जो उनकी जीवन संतुष्टि को सकारात्मक रूप से प्रभावित कर सकता है। अतः यह आवश्यक हो जाता है कि हम एक व्यवस्थित तुलनात्मक अध्ययन के माध्यम से यह जानने का प्रयास करें कि अनुदानित एवं प्राइवेट बी.एड. संस्थानों में कार्यरत शिक्षकों की जीवन संतुष्टि में कितना अंतर है, किन कारकों के कारण यह अंतर उत्पन्न होता है, तथा कौन-से उपाय अपनाकर दोनों श्रेणियों के शिक्षकों के जीवन संतोष को बेहतर बनाया जा सकता है। यह अध्ययन न केवल शिक्षकों के मानसिक, सामाजिक व आर्थिक पक्षों की समझ को गहराई देगा, बल्कि नीति-निर्माताओं, संस्थागत प्रमुखों एवं प्रशासनिक अधिकारियों को यह संकेत भी देगा कि शिक्षक कल्याण हेतु कौन-से पक्षों पर ध्यान केंद्रित किया जाना चाहिए। जीवन संतुष्टि की परिकल्पना को यदि हम मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण से देखें, तो यह व्यक्ति की आत्मबोध, उपलब्धि अनुभव, सामाजिक संबंधों की गुणवत्ता, भविष्य के प्रति आशा, तथा स्वयं की जीवन गुणवत्ता के मूल्यांकन से जुड़ा होता है। शिक्षक यदि स्वयं असंतुष्ट, तनावग्रस्त एवं असुरक्षित अनुभव करता है, तो वह शिक्षा की गुणवत्ता पर भी प्रतिकूल प्रभाव डाल सकता है। बी.एड. जैसे शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रमों में कार्यरत शिक्षकों के असंतोष का असर एक पूरी शिक्षण पीढ़ी पर पड़ सकता है, जो भावी छात्रों के लिए संकट का कारण बन सकता है। इस संदर्भ में यह अध्ययन न केवल अकादमिक दृष्टिकोण से उपयोगी है, बल्कि

व्यावहारिक और नीतिगत स्तर पर भी अत्यंत आवश्यक है। वर्तमान समय में शिक्षकों के सामने अनेक प्रकार की चुनौतियाँ उभर रही हैं जैसे डिजिटल शिक्षा का दबाव, निरंतर बदलते पाठ्यक्रम, सीखने के परिणामों की माँग, प्रशिक्षण की बाध्यता, और संस्थागत उत्तरदायित्व। ऐसे में उनकी संतुष्टि का स्तर यदि न्यून है, तो ये चुनौतियाँ उन्हें और अधिक प्रभावित कर सकती हैं। इस अध्ययन के माध्यम से यह जानने का प्रयास किया जाएगा कि अनुदानित व निजी संस्थानों में कार्यरत शिक्षकों की जीवन संतुष्टि में कौन-से आयाम विशेष रूप से प्रभावी हैं जैसे वेतन एवं वित्तीय सुरक्षा, कार्य-जीवन संतुलन, संस्थागत वातावरण, प्रशासनिक सहयोग, करियर उन्नति के अवसर, पारिवारिक समर्थन, मानसिक स्वास्थ्य, सामाजिक स्वीकार्यता, आदि। साथ ही यह अध्ययन यह भी स्पष्ट करने का प्रयास करेगा कि निजी संस्थानों में कार्यरत शिक्षकों की संतुष्टि बढ़ाने के लिए कौन-से नीतिगत कदम उठाए जा सकते हैं जैसे न्यूनतम वेतन की गारंटी, सेवा स्थायित्व, कार्य के घंटे व दायित्वों का स्पष्ट निर्धारण, प्रशिक्षण व विकास के अवसर, मनोवैज्ञानिक परामर्श, एवं कार्यस्थल पर सम्मानजनक व्यवहार की गारंटी। यह अध्ययन न केवल शिक्षा व्यवस्था को सम्यक दिशा में ले जाने का माध्यम बनेगा, बल्कि यह भी सुनिश्चित करेगा कि शिक्षक जो समाज के निर्माणकर्ता हैं स्वयं संतुष्ट, प्रेरित एवं समर्पित रह सकें। एक शिक्षक की संतुष्टि से उसकी कार्य निष्ठा, भावनात्मक जुड़ाव, विद्यार्थियों से संबंध एवं संस्थागत प्रतिबद्धता गहराई प्राप्त करती है। इसलिए, अनुदानित एवं निजी बी.एड. संस्थानों में कार्यरत शिक्षकों की जीवन संतुष्टि की तुलनात्मक समझ विकसित करना, शिक्षा की गुणवत्ता के लिए एक आवश्यक आधारशिला सिद्ध हो सकता है।

2. शोध अध्ययन की आवश्यकता एवं महत्व

शिक्षक किसी भी देश की शिक्षा प्रणाली की रीढ़ होते हैं और उनके जीवन की संतुष्टि का स्तर न केवल उनके व्यक्तिगत जीवन को प्रभावित करता है, बल्कि उनके शिक्षण व्यवहार, छात्रों के साथ उनके संबंधों, शैक्षिक वातावरण तथा शिक्षा की गुणवत्ता पर भी गहरा प्रभाव डालता है। वर्तमान समय में जब शैक्षणिक संस्थानों में प्रतिस्पर्धा, कार्यदबाव, अस्थिरता और अनेक सामाजिक व आर्थिक समस्याएं बढ़ रही हैं, तब ष्अनुदानित तथा प्राइवेट बी.एड. संस्थानों में कार्यरत शिक्षकों की जीवन संतुष्टि का तुलनात्मक अध्ययनष् अत्यंत महत्वपूर्ण और प्रासंगिक बन जाता है। यह अध्ययन न केवल दोनों प्रकार के संस्थानों में शिक्षकों के जीवन की गुणवत्ता को समझने का अवसर प्रदान करता है, बल्कि यह शिक्षा प्रशासन, नीति-निर्माताओं और संस्थागत प्रबंधकों को सुधार की दिशा में उचित निर्णय लेने में भी सहायता करता है।

शोध अध्ययन की आवश्यकता इस तथ्य से उत्पन्न होती है कि अनुदानित एवं प्राइवेट बी.एड. संस्थानों की कार्यप्रणाली, वेतनमान, संसाधनों की उपलब्धता, सेवा-शर्तें, पदोन्नति की संभावनाएं, कार्यदबाव और प्रबंधन की शैली आदि में व्यापक भिन्नता देखने को मिलती है। यह भिन्नता शिक्षकों के मानसिक, सामाजिक एवं व्यावसायिक जीवन पर गहरा प्रभाव डालती है। अनुदानित संस्थानों में कार्यरत शिक्षक अपेक्षाकृत अधिक सुरक्षा, स्थायित्व और सुविधाएं प्राप्त करते हैं, जबकि प्राइवेट संस्थानों में कार्यरत शिक्षकों को कई बार कम वेतन, अस्थायी नियुक्ति, कार्यदबाव और कम संसाधनों की चुनौती का सामना करना पड़ता है। इन सबका सीधा प्रभाव शिक्षकों की जीवन संतुष्टि पर पड़ता है, जो उनके शैक्षिक प्रदर्शन तथा समग्र विकास को भी प्रभावित करता है।

जीवन संतुष्टि एक बहुआयामी अवधारणा है, जिसमें व्यक्ति का आत्म-संतोष, मानसिक शांति, सामाजिक संबंधों से प्राप्त संतोष, आर्थिक स्थिति, कार्य संतोष तथा स्वास्थ्य आदि सभी घटक शामिल होते हैं। जब कोई व्यक्ति इन सभी क्षेत्रों में संतुलन और संतोष अनुभव करता है, तभी उसे जीवन में संतुष्टि प्राप्त होती है। शिक्षा के क्षेत्र में कार्यरत शिक्षक यदि स्वयं असंतुष्ट हैं, तो वे छात्रों को सकारात्मक प्रेरणा नहीं दे सकते और न ही गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान कर सकते हैं। इसलिए यह आवश्यक हो जाता है कि हम यह समझें कि किस प्रकार की संस्थागत संरचना और कार्य वातावरण शिक्षक के जीवन संतोष को अधिक प्रभावित करते हैं।

इस अध्ययन की प्रासंगिकता इसलिए भी है क्योंकि यह शिक्षकों की व्यक्तिगत और व्यावसायिक संतुष्टि के विविध पहलुओं का तुलनात्मक विश्लेषण प्रस्तुत करता है। यह शोध यह स्पष्ट कर सकता है कि क्या अनुदानित संस्थानों में कार्यरत शिक्षक अपने पेशे, सामाजिक स्थिति और पारिवारिक जीवन से अधिक संतुष्ट हैं या फिर प्राइवेट संस्थानों में कार्यरत शिक्षक अपने करियर और कार्यसंस्कृति से संतुष्ट हैं। साथ ही यह अध्ययन यह भी उजागर कर सकता है कि किन कारणों से असंतोष उत्पन्न हो रहा है, जैसे कि वेतन में असमानता, कार्यभार की अधिकता, प्रबंधन की उपेक्षा, प्रोन्नति की कमी, या फिर सामाजिक-सांस्कृतिक कारण।

3. सम्बन्धित साहित्य का सर्वेक्षण

- मिश्रा, एस. (2012) ने शिक्षकों की जीवन संतुष्टि का अध्ययन किया। निष्कर्ष: अनुदानित संस्थानों के शिक्षक अपने कार्य से अधिक संतुष्ट थे। निजी संस्थानों में कार्यरत शिक्षकों को वेतन, सुरक्षा और सामाजिक सम्मान की कमी महसूस हुई।
- शर्मा, आर. के. (2014) ने सरकारी और निजी शिक्षण संस्थानों में कार्यरत शिक्षक शिक्षकों की जीवन संतुष्टि का अध्ययन किया। निष्कर्ष: अनुदानित संस्थानों के शिक्षकों में कार्य संतुलन, सामाजिक सुरक्षा, और सुविधाओं के चलते संतुष्टि अधिक पाई गई। निजी संस्थानों के शिक्षक कार्य-भार और अनिश्चित भविष्य से ग्रसित थे।

- जोशी, वी. (2016) ने Teaching Effectiveness and Life Satisfaction of B.Ed. College Teachers का अध्ययन किया। निष्कर्ष: जीवन संतुष्टि और शिक्षण प्रभावशीलता में सकारात्मक सहसंबंध पाया गया। अनुदानित कॉलेजों में सुविधाएं और वेतनमान बेहतर होने के कारण शिक्षक अधिक प्रेरित एवं संतुष्ट थे।
- त्रिपाठी, डी. (2018) ने An Analytical Study of Job Satisfaction among Teacher Educators का अध्ययन किया। निष्कर्ष: निजी बी.एड. संस्थानों में कार्यरत शिक्षकों की जीवन संतुष्टि का स्तर मध्यम था। वेतन असमानता, कार्यस्थल पर तनाव, और प्रोन्नति के सीमित अवसर प्रमुख कारण थे।
- सिंह, आर. एवं मिश्रा, ए. (2020) ने Life Satisfaction and Occupational Stress among Teachersका अध्ययन किया। निष्कर्ष: अनुदानित संस्थानों के शिक्षकों में नौकरी की स्थिरता के कारण तनाव कम पाया गया। निजी संस्थानों में अनुबंध आधारित नौकरियाँ असंतोष का कारण बनीं।

4. समस्या कथन

अनुदानित तथा प्राइवेट बी.एड.सस्थानों में कार्यरत शिक्षकों की जीवन सन्तुष्टि का तुलनात्मक अध्ययन।

शोध अध्ययन के उद्देश्य

1.अनुदानित तथा प्राइवेट बी.एड.सस्थानों में कार्यरत पुरुष शिक्षकों की जीवन सन्तुष्टि का तुलनात्मक अध्ययन।

2.अनुदानित तथा प्राइवेट बी.एड.सस्थानों में कार्यरत महिला शिक्षकों की जीवन सन्तुष्टि का तुलनात्मक अध्ययन।

शोध अध्ययन की परिकल्पनाऐं

1.अनुदानित तथा प्राइवेट बी.एड.सस्थानों में कार्यरत पुरुष शिक्षकों की जीवन सन्तुष्टि में सार्थक अन्तर नहीं हैं।

2.अनुदानित तथा प्राइवेट बी.एड.सस्थानों में कार्यरत महिला शिक्षकों की जीवन सन्तुष्टि में सार्थक अन्तर नहीं हैं।

आंकड़ा संग्रहण के उपकरण

प्रस्तुत लघु शोध हेतु आंकड़ों के संकलन के लिए अनुदानित तथा प्राइवेट बी.एड. सस्थानों में कार्यरत शिक्षकों से व्यक्तिगत सम्पर्क करके प्रश्नावली के माध्यम से आंकड़ों का संकलन किया गया।

न्यादर्श

वर्तमान शोध पत्र हेतु 400 शिक्षकों को शामिल किया गया है।

उपकरण

जीवन सन्तुष्टि मापनी - डा0 (श्रीमति) प्ररोमिला सिंह द्वारा निर्मित प्रश्नावली।

5. परिकल्पनाओं का विश्लेषण एवं व्याख्या

परिकल्पना क्रमांक 1: अनुदानित तथा प्राइवेट बी.एड.सस्थानों में कार्यरत पुरुष शिक्षकों की जीवन सन्तुष्टि में सार्थक अन्तर नहीं हैं।

तालिका संख्या - 1

अनुदानित तथा प्राइवेट बी.एड.सस्थानों में कार्यरत पुरुष शिक्षकों की जीवन सन्तुष्टि का मध्यमान, मानक विचलन एवं क्रान्तिक अनुपात का विश्लेषण एवं व्याख्या

पुरुष शिक्षक	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	क्रान्तिक अनुपात	सार्थकता स्तर
अनुदानित संस्थान	100	140.9	15.88	1.30	***
प्राइवेट संस्थान	100	138.8	17.20		

व्याख्या तालिका संख्या 1 में अनुदानित एवं प्राइवेट बी0एड0 संस्थानों में कार्यरत पुरुष शिक्षकों की जीवन संतुष्टि को दर्शाया गया है। तालिका में अनुदानित संस्थानों में कार्यरत पुरुष शिक्षकों की जीवन संतुष्टि का मध्यमान एवं मानक विचलन क्रमशः 140.9 एवं 15.88 प्राप्त हुआ है जबकि प्राइवेट बी0एड0 संस्थानों में कार्यरत पुरुष शिक्षकों की जीवन संतुष्टि का मध्यमान एवं मानक विचलन क्रमशः 138.8 एवं 17.20 प्राप्त हुआ है। दोनो समूहों के मध्य क्रान्तिक अनुपात का मान 1.30 प्राप्त हुआ है। प्राप्त क्रान्तिक अनुपात सार्थकता के दोनों स्तर (0.01 एवं 0.05) से कम है। कम सार्थकता

स्तर दोनों समूहों के मध्य सार्थक अन्तर को स्पष्ट नहीं करता है। इससे सिद्ध होता है कि अनुदानित एवं प्राइवेट बी0एड0 संस्थानों में कार्यरत पुरुष शिक्षकों की जीवन संतुष्टि में सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।

तालिका संख्या - 2

अनुदानित तथा प्राइवेट बी.एड.सस्थानों में कार्यरत महिला शिक्षकों की जीवन सन्तुष्टि का मध्यमान, मानक विचलन एवं क्रान्तिक अनुपात का विश्लेषण एवं व्याख्या

महिला शिक्षक	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	क्रान्तिक अनुपात	सार्थकता स्तर
अनुदानित संस्थान	100	139.6	16.80	1.86	***
प्राइवेट संस्थान	100	141.7	14.92		

व्याख्या तालिका संख्या 2 में अनुदानित एवं प्राइवेट बी0एड0 संस्थानों में कार्यरत महिला शिक्षकों की जीवन संतुष्टि को दर्शाया गया है। तालिका में अनुदानित संस्थानों में कार्यरत महिला शिक्षकों की जीवन संतुष्टि का मध्यमान एवं मानक विचलन क्रमशः 139.6 एवं 16.80 प्राप्त हुआ है जबकि प्राइवेट बी0एड0 संस्थानों में कार्यरत महिला शिक्षकों की जीवन संतुष्टि का मध्यमान एवं मानक विचलन क्रमशः 141.7 एवं 14.92 प्राप्त हुआ है। दोनो समूहों के मध्य क्रान्तिक अनुपात का मान 1.86 प्राप्त हुआ है। प्राप्त क्रान्तिक अनुपात सार्थकता के दोनों स्तर (0.01 एवं 0.05) से कम है। कम सार्थकता स्तर दोनों समूहों के मध्य सार्थक अन्तर को स्पष्ट नहीं करता है। इससे सिद्ध होता है कि अनुदानित एवं प्राइवेट बी0एड0 संस्थानों में कार्यरत महिला शिक्षकों की जीवन संतुष्टि में सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।

6. निष्कर्ष

1) अनुदानित तथा प्राइवेट बी.एड.सस्थानों में कार्यरत पुरुष शिक्षकों की जीवन सन्तुष्टि में सार्थक अन्तर नहीं पाया गया।
2) अनुदानित तथा प्राइवेट बी.एड.सस्थानों में कार्यरत महिला शिक्षकों की जीवन सन्तुष्टि में सार्थक अन्तर नहीं पाया गया।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

Mishra, S. (2012). A Study of Life Satisfaction among Teacher Educators. Indian Journal of Educational Research.
Sharma, R. K. (2014). Life Satisfaction of Teachers in Government and Private Institutions. Rajasthan Journal of Educational Psychology.
Joshi, V. (2016). Teaching Effectiveness and Life Satisfaction of B.Ed. College Teachers. International Journal of Education and Psychology.
Tripathi, D. (2018). An Analytical Study of Job Satisfaction among Teacher Educators. Educational Review Journal.
Singh, R., & Mishra, A. (2020). Life Satisfaction and Occupational Stress among Teachers. Journal of Teacher Education & Research.